

श्री वेंकटेश सुप्रभातम्

Sri Venkatesa Suprabhatam

श्री वेंकटेश सुप्रभातम् वह प्रभात-स्तोत्र है जिससे रोज़ सुबह तिरुमला में भगवान वेंकटेश्वर को जगाया जाता है, और परंपरा से इसे सूर्योदय से पहले गाया या सुना जाता है। इसके २६ संस्कृत श्लोक १५वीं शताब्दी में प्रतिवादि भयंकरम् अण्णन् ने रचे, और इसकी शुरुआत रामायण में बालक राम से कहे गए विश्वामित्र के वचन "कौसल्या सुप्रजा राम" से होती है। इस पृष्ठ पर ये २६ श्लोक हैं; प्रातःपाठ में इनके बाद आने वाले स्तोत्रम्, प्रपत्ति और मंगलाशासनम् अभी यहाँ नहीं हैं।

श्लोक १

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते ।

उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥१॥

हे राम, कौसल्या के सुपुत्र! पूर्व दिशा में प्रभात की संध्या हो रही है। हे नरश्रेष्ठ, उठिए; दिन के पवित्र नित्यकर्म आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

श्लोक २

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज ।

उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥२॥

उठिए, उठिए, हे गोविंद! उठिए, हे गरुडध्वज! उठिए, हे लक्ष्मीकांत, और तीनों लोकों का मंगल कीजिए।

श्लोक ३

मातस्समस्तजगतां मधुकैटभारेः

वक्षोविहारिणि मनोहरदिव्यमूर्ते ।

श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रियदानशीले

श्रीवेङ्कटेशदयिते तव सुप्रभातम् ॥३॥

हे समस्त जगत की माता, मधु-कैटभ के संहारक विष्णु के वक्षस्थल पर विहार करने वाली, मनोहर दिव्य रूप वाली! हे स्वामिनी, शरणागतों को उनकी प्रिय वस्तु देने वाली, हे श्री वेंकटेश की प्रिया, आपका प्रभात मंगलमय हो।

श्लोक ४

तव सुप्रभातमरविन्दलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचन्द्रमण्डले ।
विधिशङ्करेन्द्रवनिताभिरर्चिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे ॥४॥

हे कमलनयनी, जिनका प्रसन्न मुख पूर्ण चंद्र-सा है; ब्रह्मा, शंकर और इंद्र की पत्नियाँ जिनकी पूजा करती हैं; हे वृषशैलनाथ की प्रिया, हे दयानिधि, आपका प्रभात मंगलमय हो ।

श्लोक ५

अत्र्यादिसप्तऋषयस्समुपास्य सन्ध्यां
आकाशसिन्धुकमलानि मनोहराणि ।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥५॥

अत्रि आदि सप्तर्षि संध्या-उपासना करके, आकाशगंगा के मनोहर कमल लेकर आपके चरण-युगल की पूजा के लिए आए हैं । हे शेषाद्रि-शेखर के स्वामी, आपका सुप्रभात हो ।

श्लोक ६

पञ्चाननाब्जभवषण्मुखवासवाद्याः
त्रैविक्रमादिचरितं विबुधाः स्तुवन्ति ।
भाषापतिः पठति वासरशुद्धिमारात्
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥६॥

पंचमुख शिव, कमलजन्मा ब्रह्मा, षडानन कार्तिकेय, इंद्र आदि देवता आपके त्रिविक्रम आदि चरित्रों की स्तुति कर रहे हैं । वाणी के स्वामी बृहस्पति समीप खड़े होकर आज के दिन का पंचांग पढ़ रहे हैं । हे शेषाद्रि-शेखर के स्वामी, आपका सुप्रभात हो ।

श्लोक ७

ईषत्प्रफुल्लसरसीरुहनारिकेल-
पूगद्रुमादिसुमनोहरपालिकानाम् ।
आवाति मन्दमनिलस्सह दिव्यगन्धैः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥७॥

थोड़े-थोड़े खिले कमलों और नारियल, सुपारी आदि वृक्षों की सुंदर पंक्तियों की दिव्य सुगंध लेकर मंद पवन बह रहा है । हे शेषाद्रि-शेखर के स्वामी, आपका सुप्रभात हो ।

श्लोक ८

उन्मील्य नेत्रयुगमुत्तमपञ्जरस्थाः
पात्रावशिष्टकदलीफलपायसानि ।
भुक्त्वा सलीलमथ केलिशुकाः पठन्ति
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥८॥

सुंदर पिंजरों में बैठे पालतू तोते आँखें खोलकर, अपने पात्रों में बचे केले और खीर खेल-खेल में खाकर, अब (आपका नाम) पढ़ने लगे हैं। हे शेषाद्रि-शिखर के स्वामी, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक ९

तन्त्रीप्रकर्षमधुरस्वनया विपञ्च्या
गायत्यनन्तचरितं तव नारदोऽपि ।
भाषासमग्रमसकृत्करचाररम्यं
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥९॥

नारद मुनि भी तारों की झंकार से मधुर स्वर देने वाली अपनी वीणा पर, हाथ की सुंदर गति के साथ, पूर्ण और मधुर शब्दों में बार-बार आपके अनंत चरित्र का गान कर रहे हैं। हे शेषाद्रि-शिखर के स्वामी, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १०

भृङ्गावली च मकरन्दरसानुविद्ध-
झङ्कारगीतनिनदैः सह सेवनाय ।
निर्यात्युपान्तसरसीकमलोदरेभ्यः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥१०॥

मकरंद-रस में डूबी भौरों की पंक्तियाँ गुंजार-गीत गाती हुई, आपकी सेवा के लिए पास के सरोवरों के कमलों के भीतर से निकल रही हैं। हे शेषाद्रि-शिखर के स्वामी, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक ११

योषागणेन वरदग्नि विमथ्यमाने
घोषालयेषु दधिमन्थनतीव्रघोषाः ।
रोषात्कलिं विदधते ककुभश्च कुम्भाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥११॥

ग्वालों के घरों में स्त्रियाँ उत्तम दही मथ रही हैं; मथानी की तीव्र ध्वनि से घड़े और गूँजती दिशाएँ मानो आपस में होड़ करते हुए कलह कर रहे हैं। हे शेषाद्रि-शिखर के स्वामी, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १२

पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः
हर्तुं श्रियं कुवलयस्य निजाङ्गलक्ष्म्या ।
भेरीनिनादमिव बिभ्रति तीव्रनादं
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥१२॥

सूर्य के मित्र कमलों में बैठे भ्रमर-समूह, मानो अपने अंगों की श्याम कांति से नीलकमल की शोभा छीनने निकले हों,
नगाड़ों जैसा तीव्र गुंजार कर रहे हैं। हे शेषाद्रि-शिखर के स्वामी, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १३

श्रीमन्नभीष्टवरदाखिललोकबन्धो
श्रीश्रीनिवास जगदेकदयैकसिन्धो ।
श्रीदेवतागृहभुजान्तरदिव्यमूर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१३॥

हे श्रीमान, मनोवांछित वर देने वाले, समस्त लोकों के बंधु! हे श्रीनिवास, जगत के एकमात्र दया-सागर! हे दिव्यमूर्ति,
जिनका वक्षस्थल लक्ष्मीजी का निवास है! हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १४

श्रीस्वामिपुष्करणिकाप्लवनिर्मलाङ्गाः
श्रेयोऽर्थिनो हरविरिञ्चिसनन्दनाद्याः ।
द्वारे वसन्ति वरवेत्रहतोत्तमाङ्गाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१४॥

कल्याण के इच्छुक शिव, ब्रह्मा, सनंदन आदि, स्वामी पुष्करिणी में स्नान कर निर्मल होकर आपके द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे
हैं, और भीड़ सँभालते द्वारपालों की छड़ियाँ उनके सिरों को छू रही हैं। हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १५

श्रीशेषशैलगरुडाचलवेङ्कटाद्रि-
नारायणाद्रिवृषभाद्रिवृषाद्रिमुख्याम् ।
आख्यां त्वदीयवसतेरनिशं वदन्ति
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१५॥

भक्तजन आपके निवास-पर्वत के पवित्र नाम, जैसे शेषशैल, गरुडाचल, वेंकटाद्रि, नारायणाद्रि, वृषभाद्रि, वृषाद्रि आदि,
निरंतर जपते रहते हैं। हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १६

सेवापराः शिवसुरेशकृशानुधर्म-
रक्षोऽम्बुनाथपवमानधनाधिनाथाः ।
बद्धाञ्जलिप्रविलसन्निजशीर्षदेशाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१६॥

आपकी सेवा में तत्पर आठों दिक्पाल (शिव, इंद्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु और कुबेर) अपने सिरों पर अंजलि बाँधे खड़े हैं। हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १७

धाटीषु ते विहगराजमृगाधिराज-
नागाधिराजगजराजहयाधिराजाः ।
स्वस्वाधिकारमहिमाधिकमर्थयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१७॥

आपकी शोभायात्राओं में आपको वहन करने वाले पक्षिराज गरुड़, मृगराज सिंह, नागराज शेष, गजराज और अश्वराज, सब अपने-अपने सेवा-अधिकार की महिमा और बढ़ने की प्रार्थना कर रहे हैं। हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १८

सूर्येन्दुभौमबुधवाक्पतिकाव्यसौरि-
स्वर्भानुकेतुदिविषत्परिषत्प्रधानाः ।
त्वद्दासदासचरमावधिदासदासाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१८॥

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु, जो देवसभा के प्रमुख हैं, स्वयं को आपके दासों के दासों की परंपरा में सबसे अंतिम के भी दास मानते हैं। हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक १९

त्वत्पादधूलिभरितस्फुरितोत्तमाङ्गाः
स्वर्गापवर्गनिरपेक्षनिजान्तरङ्गाः ।
कल्पागमाकलनयाकुलतां लभन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१९॥

जिनके मस्तक आपकी चरण-धूलि से दीप्त हैं और जिनका मन स्वर्ग या मोक्ष की भी अपेक्षा नहीं रखता, ऐसे भक्त केवल इस विचार से व्याकुल होते हैं कि कहीं कल्प का अंत आकर यह सेवा न छीन ले। हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २०

त्वद्गोपुराग्रशिखराणि निरीक्षमाणाः
स्वर्गापवर्गपदवीं परमां श्रयन्तः ।
मर्त्या मनुष्यभुवने मतिमाश्रयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२०॥

आपके गोपुरों के शिखरों के दर्शन मात्र से मनुष्य स्वयं को स्वर्ग और मोक्ष के परम पद पर पहुँचा हुआ अनुभव करते हैं, और इसलिए इसी मनुष्य लोक में (आपके समीप) रहने का मन बना लेते हैं। हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २१

श्रीभूमिनायक दयादिगुणामृताब्धे
देवाधिदेव जगदेकशरण्यमूर्ते ।
श्रीमन्ननन्तगरुडादिभिरर्चिताङ्घ्रे
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२१॥

हे श्रीदेवी और भूदेवी के स्वामी, दया आदि गुणों के अमृत-सागर! हे देवाधिदेव, जगत के एकमात्र शरणदाता! हे श्रीमान, जिनके चरणों की पूजा अनन्त, गरुड़ आदि करते हैं! हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २२

श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव
वैकुण्ठ माधव जनार्दन चक्रपाणे ।
श्रीवत्सचिह्न शरणागतपारिजात
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२२॥

हे पद्मनाभ, पुरुषोत्तम, वासुदेव! हे वैकुण्ठ, माधव, जनार्दन, चक्रपाणि! हे श्रीवत्स-चिह्नधारी, शरणागतों के लिए पारिजात वृक्ष! हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २३

कन्दर्पदर्पहरसुन्दरदिव्यमूर्ते
कान्ताकुचाम्बुरुहकुङ्मललोलदृष्टे ।
कल्याणनिर्मलगुणाकरदिव्यकीर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२३॥

हे सुन्दर दिव्यमूर्ति, जो कामदेव के सौन्दर्य-गर्व को भी हर लेते हैं; जिनकी प्रेमभरी दृष्टि प्रिया लक्ष्मी पर टिकी रहती है; हे कल्याणकारी निर्मल गुणों की खान, दिव्य कीर्ति वाले! हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २४

मीनाकृते कमठकोलनृसिंहवर्णिन्
स्वामिन् परश्वथतपोधन रामचन्द्र ।
शेषांशराम यदुनन्दन कल्किरूप
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२४॥

हे मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह और वामन रूप धारण करने वाले स्वामी! हे फरसाधारी तपस्वी परशुराम, हे रामचंद्र! हे शेषांश बलराम, हे यदुनन्दन कृष्ण, हे कल्कि रूप! हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २५

एलालवङ्गधनसारसुगन्धितीर्थ
दिव्यं वियत्सरिति हेमघटेषु पूर्णम् ।
धृत्वाऽद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टाः
तिष्ठन्ति वेङ्कटपते तव सुप्रभातम् ॥२५॥

वैदिक विद्वानों में श्रेष्ठ ब्राह्मण आज आकाशगंगा के दिव्य जल को, जो इलायची, लौंग और कपूर से सुगन्धित है, सोने के घड़ों में भरकर प्रसन्नता से (आपके अभिषेक के लिए) खड़े हैं। हे वेंकटपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २६

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
सम्पूरयन्ति निनदैः ककुभो विहङ्गाः ।
श्रीवैष्णवास्सततमर्थितमङ्गलास्ते
धामाश्रयन्ति तव वेङ्कट सुप्रभातम् ॥२६॥

तेजस्वी सूर्य उदय हो रहा है, कमल खिल उठे हैं, पक्षी अपने कलरव से दिशाओं को भर रहे हैं। सदा आपके मंगल की कामना करने वाले श्रीवैष्णव भक्त आपके धाम में आ पहुँचे हैं। हे वेंकट, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २७

ब्रह्मादयस्सुरवरास्समहर्षयस्ते
सन्तस्सनन्दनमुखास्त्वथ योगिवर्याः ।
धामान्तिके तव हि मङ्गलवस्तुहस्ताः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२७॥

ब्रह्मा आदि श्रेष्ठ देवता महर्षियों सहित, सनन्दन आदि संत और श्रेष्ठ योगीजन हाथों में मंगल-द्रव्य लिए आपके धाम के समीप खड़े हैं। हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

श्लोक २८

लक्ष्मीनिवास निरवद्यगुणैकसिन्धो
संसारसागरसमुत्तरणैकसेतो ।
वेदान्तवेद्यनिजवैभव भक्तभोग्य
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२८॥

हे लक्ष्मीनिवास, निर्दोष गुणों के एकमात्र सागर! हे संसार-सागर से पार उतारने वाले एकमात्र सेतु! हे वेदांत से जाने जाने वाले वैभव वाले, भक्तों के परम आनंद! हे श्री वेंकटाचलपति, आपका सुप्रभात हो।

फलश्रुति (श्लोक २९)

इत्थं वृषाचलपतेरिह सुप्रभातं
ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः ।
तेषां प्रभातसमये स्मृतिरङ्गभाजां
प्रज्ञां परार्थसुलभां परमां प्रसूते ॥

जो मनुष्य वृषाचलपति के इस सुप्रभात का प्रतिदिन पाठ करने में लगे रहते हैं, परंपरा के अनुसार प्रभात समय का यह स्मरण उन्हें वह परम प्रज्ञा प्रदान करता है जिससे जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य सुलभ हो जाता है।

स्रोत: Sri Venkatesa Suprabhatam (Suprabhatam section, 29 shlokas) as recited in the Tirumala Suprabhata Seva; text collated from sanskritdocuments.org (venkatsp), stotranidhi.com (Devanagari edition), sa.wikisource.org (श्रीवेङ्कटेशसुप्रभातम्) and shlokam.org

ये अर्थ हमारा पहला मसौदा हैं। अभी किसी विद्वान ने इनकी जाँच नहीं की है। कोई भूल दिखे तो हमें ज़रूर बताएँ।

getnitya.com/hi/venkateswara/suprabhatam/